

विज्ञापन चित्र

(POSTER DESIGN)

आधुनिक युग में पोस्टर (विज्ञापन चित्र) का प्रचलन बहुत जोर-शोर से बढ़ता जा रहा है। आप घर से बाहर निकले नहीं कि मकानों की दीवारों पर सड़क के किनारे पेड़ आदि पर तथा बाज़ार में तो प्रत्येक दुकान में कई प्रकार के विज्ञापन आपको पढ़ने और देखने को मिलेंगे और इनसे भी बड़ा उदाहरण आप सिनेमा के विज्ञापनों से ले सकते हैं। सिनेमा के विज्ञापन भी पोस्टर के बड़े रूप हैं इनको होल्डिंग कहते हैं। बाजारों में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए जितने भी माध्यम अपनाए जाते हैं उनमें विज्ञापन चित्र बहुत प्रभावशाली होते हैं। पोस्टर केवल व्यापार के क्षेत्र में ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु समाज के विभिन्न क्षेत्रों में इसका प्रयोग प्रभावशाली ढंग से किया जाता है। जैसे किसी उत्सव मनाने की सूचना, किसी सामाजिक नीति अपनाने की घोषणा तथा अन्य किसी भी प्रकार की सूचना जनता में पहुँचाने के लिए पोस्टर ही प्रयोग किए जाते हैं। आपके पाठ्यक्रम में केवल आपके विद्यालय या राष्ट्र से सम्बन्धित पोस्टर बनाने हैं।

पोस्टर या विज्ञापन शब्द से अब स्पष्ट हो गया है कि किसी भी चीज़ का प्रचार करने के लिए पोस्टर बनाए जाते हैं और जो भी पोस्टर आपने देखे होंगे उनमें लिखाई के साथ-साथ चित्र भी बने होते हैं। पोस्टर में लिखाई और चित्र का बराबर महत्व होता है। जो संदेश आप अपने पोस्टर के माध्यम से देना चाहते हैं वह दूर से ही स्पष्ट पढ़ा जाना चाहिए और चित्र भी इतना सार्थक एवं प्रभावकारी होना चाहिए कि यदि कोई अनपढ़ या उस भाषा को जानने वाला न हो जिस भाषा में सन्देश दिया गया हो तो उनको भी चित्र देखने मात्र से सन्देश का अभिप्राय मालूम हो जाना चाहिए, तभी उस पोस्टर को सफल विज्ञापन चित्र कहा जा सकता है।

पोस्टर में लिखाई व चित्र संक्षिप्त में होने चाहिए। क्योंकि आज का युग बड़ा संघर्षमय और व्यस्तता का है। प्रत्येक मनुष्य जल्दबाज़ी में ही रहता है। इसलिए उसके पास समय का अभाव है। उसके पास पोस्टर पढ़ने के लिए अधिक समय नहीं। इसलिए यदि पोस्टर में कम से कम लिखाई और चित्र सरल होगा तो देखने वाला थोड़ी ही देर में पोस्टर का संदेश मालूम कर लेगा। इस प्रकार सफल पोस्टर वही कहलाएगा जो कम से कम समय में पूरी सूचना देखने वालों को दे सके।

पोस्टर में रंगों का चुनाव भी बड़ा आकर्षक होना चाहिए। रास्ते में चलते-चलते कोई भी आदमी बगैर पोस्टर को पढ़े, देखे आगे न जाए। चाहे वह कितनी ही जल्दी में क्यों न हो, एक मिनट के लिए वह ठहर जाए कि पोस्टर क्या संदेश दे रहा है। तभी पोस्टर की सफलता मानी जाएगी। पोस्टर और चार्ट आदि बनाने में अन्तर है। चार्ट में कई सूचनाएँ होती हैं जिनको पढ़ने के लिए समय चाहिए और नज़दीक से पढ़े जाएँगे।

कला विषय के अन्तर्गत आपने आठवीं कक्षा तक लिखाई का कार्य, शुभकामना पत्रक (Greeting Cards), कहानी चित्रण (Illustrations), चार्ट (Charts) तथा छोटे पोस्टर भी बनाए हैं। परन्तु अब आपका अध्ययन स्तर बढ़ गया है इसलिए आपको ये चित्र भी कुछ ऊँचे स्तर के बनाने हैं। उपरोक्त सभी विषयों को बनाने के लिए आपको सबसे पहले लिखाई (Lettering) का बहुत अभ्यास (Practice) चाहिए। तरह-तरह से अक्षरांकन लिखना और इतनी सफाई से लिखना कि देखने वाले को छपाई के अक्षर लगें। अक्षरांकन में आप रेखागणित वाले यन्त्रों का अच्छी तरह उपयोग करें। ये सभी उपकरण भी सही हालत व अच्छी किस्म के होने चाहिए। सही हालत से अभिप्राय यह है कि इन उपकरणों को खरीदते समय अच्छी तरह देख लें, जैसे-परकार है, परकार इतनी ढीली न हो कि बिना हिलाए अपने आप ही खुल जाए या कम हो जाए और इतनी कसी हुई भी न हो कि खोलने से बड़ी ताकत लगानी पड़े और आप कार्य करते-करते परकार को ठीक करने पर ही लगे रहें। फुट रूल है तो उसके किनारे बिल्कुल सीधे सरल रेखा में होने चाहिए वरना रेखा कटी-फटी सी लगेगी और आप सही और सुन्दर कार्य नहीं कर सकेंगे। कहने के लिए ये बातें बहुत मामूली लगती हैं कि ये भी कोई बातें लिखने की हैं परन्तु इसका महत्व कार्य करते समय मालूम होता है। अतः अपने उपकरणों को खरीदते समय भी ध्यान से खरीदें और बाद में भी सम्भाल कर रखें। प्रायः बच्चों की आदत होती है कि परकार लेकर बेच, डेस्क आदि फर्नीचर पर छेद करते रहते हैं या रेखाएँ खींच-खींचकर अपना नाम आदि अंकित करते रहते हैं। फुटरूल के किनारों को ब्लेड या चाकू आदि से काटते रहते हैं और इस प्रकार के उपकरणों से फिर आप आशा करें कि कार्य सही और आकर्षक हो तो असम्भव है।

अक्षरांकन (Lettering) ले आउट (Layout) शुभकामनापत्रक (Greeting Cards) और पोस्टर (Posters) में कुछ सामान्य बातें हैं जिनका ध्यान रखना आवश्यक है।

1. कागज़ पर सुव्यवस्थित स्थान नियोजन (Good Space Setting)
2. सरल एवं आकर्षक अक्षरांकन (Simple & Attractive Lettering)
3. विषयानुसार सुन्दर चित्र (Suitable Illustrations)

4. आकर्षक रंग योजना (Attractive Colour Scheme)
5. कार्य में स्वच्छता (Neatness in Execution)
6. आकर्षक सामान्य प्रभाव (Good General Impression)

अक्षरांकन को छोड़कर उपरोक्त सभी बातों का ध्यान चित्रकला के सभी प्रकार की रचनाओं में रखना आवश्यक है। अक्षरांकन का कार्य पोस्टर आदि में ही किया जाता है।

1. सुव्यवस्थित स्थान नियोजन (Good Space Setting)

जिस कागज़ पर कार्य करना है उसको उपरोक्त भागों के अनुसार सुन्दर ढंग से बांटना चाहिए। सीधे असली कागज़ पर कार्य आरम्भ करने से पहले किसी रफ कागज़ पर रफ स्केच (Rough Sketch) बना कर देखो, इस प्रकार के कई रफ स्केच बनाओ, फिर जो भी स्केच आपको अधिक भाता है उसी की Fair Drawing करो, रंग योजना (Colour Scheme) भी पहले कई किस्म की रफ कागज़ में करो फिर जो भी अच्छी लगती है उसी रंग योजना (Colour Scheme) का प्रयोग करो। प्रत्येक भाग के लिए उचित स्थान छोड़ना अनिवार्य है। ऐसा न करने से चित्र में उलझन सी पैदा हो जाएगी और चित्र नीरस बन जाएगा, आपकी मेहनत निरर्थक साबित होगी। अतः स्थान सुव्यवस्थित ढंग से बांटो।

2. सरल और आकर्षक अक्षरांकन (Simple and Attractive Lettering)

विषय के अनुसार लिखाई होनी चाहिए। क्योंकि आकारानुसार लिखाई भी हल्की और भारी होती है। जैसे यदि आप मोटे-मोटे अक्षर (Bold Letters) लिखेंगे तो उनका प्रभाव देखने में भी भारीपन लिए हुए होगा और यदि आप पतले अक्षर (Roman Italic Letters) लिखते हैं तो यह देखने में आंखों को हल्के लगेंगे। इस प्रकार यदि पोस्टर का विषय या नारा कुछ समस्या युक्त या कठोरता लिए हुए है तो आपको अक्षरों की बनावट भी भारीपन (Boldness) वाली रखनी चाहिए। यदि नारा मनोरंजन आदि के लिए है तो फिर हल्के अक्षर (Roman Letters) में लिखने उपयुक्त रहेंगे। उदाहरण के लिए यदि आप “स्वस्थ बनो” पर पोस्टर बनाना चाहते हैं तो इसमें अक्षर भारी होने चाहिए क्योंकि स्वस्थता मज़बूती की निशानी है। मज़बूती को दर्शाने के लिए मोटे अक्षर सार्थक होंगे। दूसरी ओर यदि आप उत्सव, नृत्य आदि पर पोस्टर बना रहे हैं तो ये विषय कोमलता को प्रकट करते हैं अतः अक्षर भी हल्के और सजावट वाले होने चाहिए। इस नियमानुसार कार्य में बड़ी संजीवता आएगी। अक्षरों की बनावट तक ही नियम सीमित नहीं अपितु रंग-योजना में भी वही बातों का खास ध्यान रखना है। गहरी तान वाले रंगों को हम भारीपन व कठोरता लिए हुए कह सकते हैं, जब कि हल्की तान वाले रंग खास कर पीला, गुलाबी और नारंगी रंग कोमलता को

4. आकर्षक रंग योजना (Attractive Colour Scheme)
5. कार्य में स्वच्छता (Neatness in Execution)
6. आकर्षक सामान्य प्रभाव (Good General Impression)

अक्षरांकन को छोड़कर उपरोक्त सभी बातों का ध्यान चित्रकला के सभी प्रकार की रचनाओं में रखना आवश्यक है। अक्षरांकन का कार्य पोस्टर आदि में ही किया जाता है।

1. सुव्यवस्थित स्थान नियोजन (Good Space Setting)

जिस कागज पर कार्य करना है उसको उपरोक्त भागों के अनुसार सुन्दर ढंग से बांटना चाहिए। सीधे असली कागज पर कार्य आरम्भ करने से पहले किसी रफ कागज पर रफ स्केच (Rough Sketch) बना कर देखो, इस प्रकार के कई रफ स्केच बनाओ, फिर जो भी स्केच आपको अधिक भाता है उसी की Fair Drawing करो, रंग योजना (Colour Scheme) भी पहले कई किस्म की रफ कागज में करो फिर जो भी अच्छी लगती है उसी रंग योजना (Colour Scheme) का प्रयोग करो। प्रत्येक भाग के लिए उचित स्थान छोड़ना अनिवार्य है। ऐसा न करने से चित्र में उलझन सी पैदा हो जाएगी और चित्र नीरस बन जाएगा, आपकी मेहनत निरर्थक साबित होगी। अतः स्थान सुव्यवस्थित ढंग से बांटो।

2. सरल और आकर्षक अक्षरांकन (Simple and Attractive Lettering)

विषय के अनुसार लिखाई होनी चाहिए। क्योंकि आकारानुसार लिखाई भी हल्की और भारी होती है। जैसे यदि आप मोटे-मोटे अक्षर (Bold Letters) लिखेंगे तो उनका प्रभाव देखने में भी भारीपन लिए हुए होगा और यदि आप पतले अक्षर (Roman Italic Letters) लिखते हैं तो यह देखने में आंखों को हल्के लगेंगे। इस प्रकार यदि पोस्टर का विषय या नारा कुछ समस्या युक्त या कठोरता लिए हुए है तो आपको अक्षरों की बनावट भी भारीपन (Boldness) वाली रखनी चाहिए। यदि नारा मनोरंजन आदि के लिए है तो फिर हल्के अक्षर (Roman Letters) में लिखने उपयुक्त रहेंगे। उदाहरण के लिए यदि आप “स्वस्थ बनो” पर पोस्टर बनाना चाहते हैं तो इसमें अक्षर भारी होने चाहिए क्योंकि स्वस्थता मजबूती की निशानी है। मजबूती को दर्शाने के लिए मोटे अक्षर सार्थक होंगे। दूसरी ओर यदि आप उत्सव, नृत्य आदि पर पोस्टर बना रहे हैं तो ये विषय कोमलता को प्रकट करते हैं अतः अक्षर भी हल्के और सजावट वाले होने चाहिए। इस नियमानुसार कार्य में बड़ी संजीवता आएगी। अक्षरों की बनावट तक ही नियम सीमित नहीं अपितु रंग-योजना में भी वही बातों का खास ध्यान रखना है। गहरी तान वाले रंगों को हम भारीपन व कठोरता लिए हुए कह सकते हैं, जब कि हल्की तान वाले रंग खास कर पीला, गुलाबी और नारंगी रंग कोमलता को

जाए, ये सारी बातें काफी अध्ययन एवं अभ्यास के उपरान्त ही प्राप्त हो सकती हैं। इसका बारम्बार अभ्यास नितान्त आवश्यक है। प्रतिदिन (Sketching) करने से केवल हाथ सेट ही नहीं होगा। अपितु नई-नई कल्पनाएं, नए-नए तरीके स्वतः ही सीखे जा सकते हैं। कला में रुचि जिसकी होगी वह उपरोक्त अभ्यास बार-बार किए बिना रह ही नहीं सकता।

3. विषयानुसार चित्र (Suitable Illustrations)

जितना महत्व अक्षरांकन का है उतना ही चित्र का भी, दोनों चीजों पर एक साथ दृष्टि पड़नी चाहिए। चित्र बनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जिस विषय का पोस्टर बना रहे हैं क्या चित्र उससे सम्बन्धित बन रहा है ? ऐसा न हो कि लिखा कुछ है और चित्र कुछ और ही बन रहा है। इसमें केवल अपनी रुचि का ध्यान नहीं रखा जाता है बल्कि विषय और अन्य लोगों का ध्यान रखा जाता है जिनके लिए पोस्टर बनाया जा रहा है। चित्र विषयानुसार चुनने के पश्चात यह देखना है कि चित्र बहुत बारीकियों को न दर्शाए, ऐसा न हो कि मुख्य अभिप्राय लुप्त हो जाए और गौण वस्तुएं अर्थात् अनावश्यक चीजें चित्र में उभर कर आ जाएं। चित्र को दृश्य का रूप भी न दिया जाए, जितना साधारण व सरल आप चित्र को बनाएं उतना ही वह चित्र अपना अभिप्राय सजीवता से दर्शाएगा। चित्र की रेखाएं मोटी तथा मजबूत होनी चाहिए ताकि काफी दूर से भी चित्र आसानी से देखा जा सके। यही बात रंगों की है। रंग काफी चमकीले तथा विपरीत (Contrast) होने चाहिए ताकि दूर से देखने में एक जैसे रंग न लगें, यदि पोस्टर में फीके और सारे संगति के रंग प्रयोग हो गए तो दूर से कुछ भी नहीं दिखाई देगा और पोस्टर की उपयोगिता निरर्थक हो जाएगी, अतः पोस्टर में अक्षरांकन और चित्र का विशेष महत्व है। इनको नियमानुसार बनाने का पूर्ण प्रयास किया जाए।

4. आकर्षक रंग योजना (Attractive Colour Scheme)

पोस्टर में अच्छी Space Setting होनी चाहिए, सुन्दर अक्षरांकन हो गया, विषयानुसार चित्र भी बना लिया अब रंग योजना की बारी आई, आप रंग चक्र के बारे में काफी अध्ययन कर चुके हैं। आपको रंगों के बारे में बनाए गए सभी पहलू भली भांति याद रखने होंगे, जब भी आप रंग योजना बनाएं, पहले रफ कागज पर कई किस्म की योजनाएँ बनाए तभी सही और आकर्षक योजना का पता चल सकता है। काफी अनुभव प्राप्त चित्रकार भी इसी प्रकार कार्य करते हैं और एक ही योजना सीधे कोई नहीं बना सकता, यदि बनाएगा भी तो उसमें कुछ त्रुटियाँ रहने की सम्भावना रहती है। विषयानुसार रंगों का सही चयन किया जाए। संगति (Harmonious) और विपरीत (Contrast) रंगों का ज्ञान पूरा होना चाहिए। रंग योजना (Colour Scheme) दो प्रकार की होती हैं- 1. संगति रंग योजना (Harmonious Colour Scheme) 2. विपरीत रंग योजना (Contrast

Colour Scheme) दोनों Colour Schemes में से विपरीत रंग योजना (Contrast Colour Scheme) अधिक आकर्षक एवं प्रभावकारी होती है। अतः विपरीत रंग योजना को ही अपनाया जाए। ऊष्ण और शीतल रंगों का अध्ययन भी आप कर चुके हैं। विषयानुसार इन ऊष्ण और शीतल (Warm and Cool Colours) का प्रयोग करना आपको आना चाहिए।

5. कार्य में स्वच्छता (Neatness in Execution)

उपरोक्त सभी नियमों का आपने पालन किया है परन्तु यदि आप स्वच्छता के प्रति थोड़ा सा भी लापरवाह हुए तो आपकी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। कार्य करते समय सभी और उचित उपकरणों का ही प्रयोग करें। ड्राईंग करने से पहले एक स्वच्छ रुमाल आप हाथ के नीचे रखें ताकि हाथ का पसीना या किसी भी प्रकार की गन्दगी कागज पर न लग सके, पहले हल्की पेसिन्ल से कार्य करें। रबड़ का प्रयोग बहुत कम करें। यदि रबड़ लगाना ही पड़े तो हल्के हाथ से चलाएँ और अच्छी किस्म का प्रयोग करें। आमतौर पर देखा गया है कि बच्चे जब रबड़ लगाते हैं तो बहुत जोर से चलाते हैं जिससे कागज की ऊपर की सतह छिलकर बहुत खराब हो जाती है। उसके ऊपर फिर रंग आदि करने में सफाई नहीं आती है। उसके बाद जब रंग लगाना आरम्भ करते हैं तो एक किनारे से आरम्भ कर दूसरे किनारे तक ले जाओ। ऐसा करने से रंगों में सफाई रहती है। यदि आप ब्रुश का एक स्ट्रोक बाईं तरफ दूसरा अलग लगाते हैं और बार-बार एक ही स्थान पर लगाते हैं तो रंग कहीं से मोटा और कहीं पर पतला लगेगा, और जब रंग सारे कागज पर सपाट नहीं लगेगा तो स्वच्छता आ ही नहीं सकती। ब्रुश भी अच्छी किस्म के होने अनिवार्य हैं अन्यथा जहां तक आप रंग लगाना चाहते हैं तो रंग उससे बाहर निकल जाएगा या फिर बीच में स्थान छूटने की सम्भावना रहेगी। कार्य में Finishing अच्छी होनी चाहिए। इस प्रकार स्वच्छता रखने से चित्र में और भी अधिक निखार आएगा।

6. सामान्य प्रभाव आकर्षक (General Impression Good)

किसी भी चित्र को पहली दृष्टि पड़ने पर क्या प्रभाव पड़ता है उसे (General Impression) कहा जाता है। कई चित्र ऐसे होते हैं कि नियमानुसार बने तो सही परन्तु दृष्टि में ही आकर्षित नहीं लगते। परन्तु कुछ चित्र को देखते ही दिल करता है कि उसे एक दम उठाकर देखते रहें भले ही उसके अन्दर किसी सिद्धान्त की कमी हो। परन्तु यदि (general Impression) आकर्षक हो तो मामूली सी त्रुटियाँ नगण्य सी बन जाती हैं। इसमें एक नियम और शामिल किया जा सकता है, वह है (Proper Presentation) इसका अभिप्राय है आप चित्र को किस प्रकार अध्यापक को, परीक्षक को या दर्शक को देखने के लिए पेश करते हो। क्या आपका अपना चित्र पेश करने का ढंग सही है।

छोटी सी हो परन्तु उसको इस तरह बन्द करके सजाकर पेश किया जाता है कि देखने में बहुत सुन्दर लगता है। इसमें सुन्दरता के ज्ञान की झलक मिलती है। वरना आप भेंट की चीज़ को खुले रूप में भी तो प्रस्तुत कर सकते हो। ठीक यही उद्देश्य चित्र को दर्शक तक पहुंचाने का है। आपने चित्र पूर्ण कर लिया और उसकी रफ लाइनें, फैला हुआ रंग, धब्बे या मुड़ा हुआ कागज़, बगैरे हाशिया या माउंट अस्त-व्यस्त रूप में रखा हुआ है तो दर्शक को रुचिकर नहीं लगेगा।

पोस्टर के लिए सामग्री

(MATERIAL FOR POSTER)

पोस्टर काफी बड़े कागज़ों पर बनाए जाते हैं क्योंकि पोस्टर का मतलब आपको पहले ही समझाया गया है कि किसी भी चीज़ का प्रचार करने के लिए पोस्टर या विज्ञापन चित्र बनाए जाते हैं। पोस्टर दीवारों पर चिपकाए जाते हैं या फिर बड़े बोर्डों पर। इसलिए पोस्टर बनाने के लिए मोटा कागज़ ही चाहिए। सफेद ड्राईंग पेपर भी इसके लिए प्रयोग किया जाता है। आजकल बाज़ार में अनेक रंगों के पोस्टर कागज़ भी मिलते हैं। इसके एक तरफ रंग लगा हुआ मिलता है। जिससे पृष्ठ भूमि के लिए रंग की आवश्यकता नहीं होती। इस कागज़ का नाम ही पोस्टर (Poster Paper) है।

पोस्टर बनाने के लिए जो रंग प्रयोग किए जाते हैं उनका नाम भी पोस्टर रंग (Poster Colour) ही है। पोस्टर के कार्य में सामग्री की काफी स्वतन्त्रता है। रंगों के स्थान पर यदि आप उचित समझते हैं, तो रंगीन कागज़ चिपका सकते हैं। इसी प्रकार चित्र या अक्षरांकन में से कोई भी चीज़ बनाई रुचिकर लगती है और आप समझते हैं कि उनके चिपकाने से आपका पोस्टर अधिक आकर्षक और उचित लग सकता है तो उस चित्र को काटकर अपने पोस्टर में चिपका सकते हैं। परन्तु इसके बारे में काफी सुझबूझ से काम लेना आवश्यक है। वरना आपके पोस्टर का उद्देश्य तथा सन्देश पूर्ण नहीं होगा। कहने का अभिप्राय है कि पोस्टर बनाने के लिए चाहे आप जो भी तरीका अपनाएँ आप का पोस्टर बहुत ही आकर्षक होना चाहिए। तभी वह सफल पोस्टर कहलाएगा।

पोस्टर के अंग

(PARTS OF THE POSTER)

विज्ञापन चित्र (Poster) की साधारण भूमिका का ज्ञान आप पूर्ण रूप से प्राप्त कर चुके हैं। अर्थात् विज्ञापन चित्र क्या चीज़ है, इसमें किन-किन बातों का ध्यान रखना होता है, इसके लिए

क्या-क्या सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। अब हम विज्ञापन चित्र (Poster) के अंगों का वर्णन करेंगे, जो कि निम्न प्रकार से हैं :-

1. सन्देश का नारा (Slogan)
2. चित्र (Illustration)
3. चिन्ह चित्र (Symbol)
4. लिखित सामग्री (Copy Matter)
5. विज्ञापक का नाम (Name of Advertiser)

उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर कागज पर स्थान नियोजन के बारे में सोचना पड़ेगा कि इन चीजों के लिए कितना-कितना स्थान दिया जाना चाहिए, ऐसा न हो कि सारे चित्र में एक ही भाग की प्रधानता आ जाए और बाकी चीजें बिल्कुल छिप जाएँ। सभी अंगों का अपना यथोचित स्थान एवं अस्तित्व होना अनिवार्य है। अतः अब पाँचों अंगों को समझने का प्रयास करें।

1. सन्देश (Slogan)—विज्ञापन चित्र बनाते समय सन्देश (Slogan) कहां पर लिखा जाए, इस पर आपको पूर्ण स्वतन्त्रता है। चाहे आप कागज के ऊपर वाले हिस्से में लिखें या निचले भाग में। चाहे बाईं ओर लिखें या दाईं तरफ, परन्तु उसका प्रभाव सबसे अधिक होना चाहिए। अक्षरों की बनावट के बारे में भी यह देखना है कि विषयानुसार कठोर या कोमल हो। कठोरता के लिए भारी अक्षरांकन और कोमलता के लिए हल्के अक्षर लिखे जाएँ। रंगों का चुनाव भी इसी प्रकार होना चाहिए। जिस बात पर आप जोर देना चाहते हैं वह गरम अर्थात् आकर्षक होना चाहिए और यह ज्ञान आप रंग चक्र वाले अभ्यास में प्राप्त कर चुके हैं कि कौन सा रंग उष्ण और कौन सा शीतल है। ये दोनों प्रकार के रंग क्या-क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं। रंग चक्र में लाल और पीले रंगों की ओर के रंग विजय, क्रान्ति जोश तथा साहस आदि को प्रदर्शित करते हैं जबकि नीला रंग तथा उसके आस-पास के शीतल रंग शान्ति, धैर्य तथा सहनशीलता आदि गुणों के प्रतीक हैं। अतः विषयानुसार ही रंगों का प्रयोग किया जाए। इस अंग में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सन्देश (Slogan) टूटना अर्थात् अलग-अलग भागों में नहीं बंटना चाहिए। यदि सन्देश का कोई हिस्सा कहीं और दूसरा हिस्सा कहीं लिखा होगा तो दर्शकों को पढ़ने में बहुत असावधानी होगी। सन्देश के अक्षर शब्दानुसार अलग-अलग तो हो सकते हैं क्योंकि किसी शब्द को महत्व देना है तो उसके अक्षर प्रभावशाली ढंग से लिखने होंगे तथा उसका रंग भी लाल या पीला कर सकते हैं। पोस्टर का यह अंग बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए इस पर काफी विचार करना पड़ेगा।

2. चित्र (Illustration)—विज्ञापन चित्र (Poster) में जो चित्र बनाए जाते हैं वह अन्य चित्रों से

लिए पूरी बारीकियां (Details) दर्शायी जाती हैं। प्रकाश व छाया (Light and Shade) के माध्यम से गोलाइयां आदि दिखाने का पूर्ण प्रयास किया जाता है। परन्तु पोस्टर में जो चित्र बनाया जाता है वह केवल चित्र में थोड़ा आकर्षण लाने के लिए बनाया जाता है और वह भी पोस्टर के विषयानुसार होना आवश्यक है। यदि आप पोस्टर में चित्र को बहुत स्थान दे देते हैं तो दर्शक केवल चित्र देखने में ही उलझ जाएँगे और आपके सन्देश का उन पर प्रभाव नहीं पड़ेगा, जिससे पोस्टर का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि उसमें चित्र के लिए उतना ही स्थान दिया जाए जिससे कि सन्देश का भाव दर्शकों को स्पष्ट हो जाए।

पोस्टर में चित्र एवं सन्देश का परस्पर सम्बन्ध होना चाहिए। केवल सजावट की दृष्टि से अनावश्यक चित्र नहीं बनाना चाहिए। चित्र की रेखाओं में जान (Strength) होनी चाहिए। इसके लिए मोटी रेखाओं (Bold lines) का प्रयोग किया जाना चाहिए। पोस्टर के चित्र में रंग भी सपाट भरते हैं। रंग की विभिन्न तानें बनाकर चित्र को उभारा जाए। इस प्रकार पोस्टर के इन दोनों अंगों को बहुत सतर्कता से बनाया जाए। इन्हीं पर पोस्टर का सफल या असफल होना निर्भर करेगा।

3. चिन्ह (Symbol) - विज्ञापन चित्र किसी खास संस्था, सरकार, विद्यालय, कारखाना, दुकान, पुस्तक विक्रेता तथा व्यक्ति आदि का भी हो सकता है। जिसका भी विज्ञापन चित्र बनाना हो उसका अपना कोई निश्चित चिन्ह (Symbol) होता है। Symbol में जो चीजें होती हैं वह पोस्टर के सन्देश को बिल्कुल संक्षेप (Short) में दर्शाता है। जैसे कि आपका विद्यालय का नाम “राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिमला” है तो आप केवल “रा० उ० मा० विद्यालय शिमला” छोटे-छोटे अक्षरों, गोलाई, त्रिकोण, या किसी भी आकृति में लिख सकते हैं और साथ में कोई संक्षिप्त विद्यालय का (Motto) ‘आदर्श’ दर्शाया जा सकता है। इसी प्रकार आपने हिमाचल सरकार का (Symbol) प्रत्येक सरकारी वस्तुओं पर देखा होगा। (Symbol) बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि चिन्ह पोस्टर के निचले भाग में होना चाहिए और कम से कम स्थान घेरे। इसका अक्षरांकन भी सूक्ष्म होना चाहिए ताकि पोस्टर का शेष महत्वपूर्ण भाग दब न जाए। इसका उदाहरण आप अपनी पुस्तकों पर भी देख सकते हो। प्रत्येक प्रकाशक का अपना छोटा सा (Symbol) पुस्तक के बाहरी कवर पर छपा होता है। इस तरह आपको (Symbol) का अर्थ और बनाने का ढंग समझ आ गया होगा।

4. लिखित सामग्री (Copy Matter) - विज्ञापन चित्र में सन्देश, चित्र और चिन्ह का वर्णन हो चुका है। Poster में जो भी सन्देश देने वाला हो वह थोड़ा अपने भाव समझने का प्रयास

आप “वन महोत्सव” का विज्ञापन चित्र बना रहे हैं तो सन्देश तो वन-महोत्सव हो गया परन्तु इसको थोड़ा और समझाने का प्रयास इस प्रकार किया जा सकता है-“वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, इनकी रक्षा करो।” ये वाक्य आप पोस्टर में उचित स्थान पर हल्के अक्षरों द्वारा लिख सकते हैं। इससे आपका सन्देश बहुत स्पष्ट हो जाएगा। खासकर व्यापारिक, सामाजिक तथा सरकारी विभागों में विज्ञापनों में इसकी अधिक आवश्यकता है।

अभ्यास के लिए आप भी विज्ञापन चित्रों में लिखित सामग्री (Copy matter) को लिखने के लिए स्थान दें। परन्तु इसका अक्षरांकन भी बहुत सुन्दर एवं स्वच्छता से होना चाहिए। जिस प्रकार (Symbol) के लिए सतर्कता बर्ती गई है कि वह पोस्टर के दूसरे अंगों को दबाए नहीं, उसी प्रकार लिखित सामग्री (Copy Matter) लिखते समय भी यही ध्यान रखा जाना चाहिए क्योंकि लिखने के लिए काफी अक्षर होते हैं इसलिए कहीं Poster में अधिक तंगी (Congestion) न आ जाए। वरना विज्ञापन चित्र का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाएगा।

5. विज्ञापक का नाम (Name of Advertiser) - किसी भी प्रकार का पोस्टर हो उसका अभिप्राय हमेशा यही है कि कोई संदेश जनता तक पहुंचाना। इसका अर्थ है कि कोई सन्देश देने वाला भी होगा। किसकी तरफ से यह सन्देश दिया जा रहा है। उसका नाम व पता भी पोस्टर में देना आवश्यक है और यह पोस्टर के सबसे निचले भाग में बारीक अक्षरांकन में दिया जाना चाहिए। यद्यपि आपके पाठ्यक्रमानुसार यह थोड़ा अधिक लगे परन्तु अभ्यास करने के लिए कोई हानि नहीं है। आपको पोस्टर बनाते समय इन सभी नियमों तथा अंगों का पूरा-पूरा ध्यान रखना है।

अब अंत में यही सार निकला कि पोस्टर (विज्ञापन चित्र) में सबसे पहले कागज़ रखने का ढंग देखना है। आमतौर पर ऊंचाई कागज़ पर ही बनाए जाते हैं। उसके बाद कागज़ को सुव्यवस्थित ढंग से बांट दिया जाए। विषयानुसार चित्र बनाएं। पोस्टर में अक्षरांकन का ही सबसे अधिक काम है। सन्देश (Slogan) भी लिखना है, चिन्ह (Symbol) में भी अक्षरांकन का कार्य है। सामग्री लिखित (Copy matter) में अक्षरों का प्रयोग होना है। और विज्ञापक (Advertiser) का नाम देना है तो वह भी अक्षरांकन का ही काम है। ध्यान इस बात का रखना आवश्यक है कि अक्षरों के साइज़ व बनावट इस प्रकार की हो कि देखते ही पता चल जाए कि Slogan क्या है ? Copy matter क्या है ? और विज्ञापक का नाम क्या है ? दूर से सबसे पहले Slogan पर दृष्टि पड़नी चाहिए, फिर चित्र पर और उसके बाद Copy matter तदन्तर क्रमशः symbol और विज्ञापक (Advertiser) के नाम पर ध्यान जाना चाहिए। जिस पोस्टर में क्रम नहीं होगा उसे सफल या प्रभावशाली पोस्टर नहीं कहा जा सकता। कार्य में स्वच्छता एवं सुन्दरता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। रंग यदि रेखाओं से बाहर निकल गए हैं तो बारीक ब्रुश लेकर उनको सफाई से ठीक कर दिया जाए। कार्य पूरा होने के बाद पोस्टर को कुछ दूर से अवश्य देखें। आपको स्वयं अपनी त्रुटियों का पता लगेगा कि कहां पर क्या कमी रह गई है। आप इसे आसानी से ठीक कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ विज्ञापन चित्र पुस्तक में दिए गए हैं।

A B C D E F G

H I J K L M N O

P Q R S T U V

W X Y Z.

1 2 3 4 5 6 7 8

9 0.

क ख ग घ ङ च छ
ज झ ञ ट ठ ड ढ
ण त थ द ध न प
फ ब भ म य र ल व
श ष स ह

ॐ
ॐ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
९ ०

कला-संस्कृत ।

A B C D E

F G H I J K

L M N O P

Q R S T U

V W X Y Z

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

a b c d e f g
h i j k l m n o
p q r r s t u v
w x y z.

A B C D E F G H I

J K L M N O P Q R

S T U V W X Y Z.

FREE HAND BRUSH LETTERING

अ इ उ ए क

ख घ ङ च छ

ज झ थ द ठ

ण फ य ल

श स ह क्ष

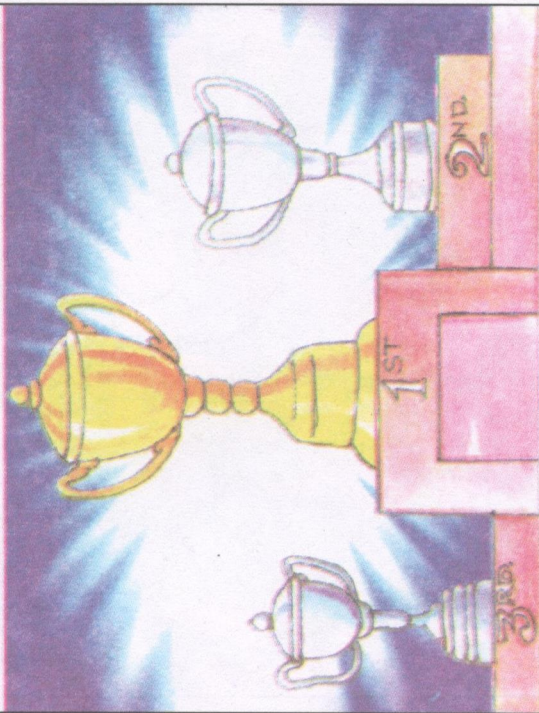
हिन्दी अक्षराँकन

GOVT. SR. SEC. SCHOOL SHIMLA
PRESENTS



DRAMA

वार्षिकोत्सव



राजकीय उच्च विद्यालय
रामपुर

हिमाचल

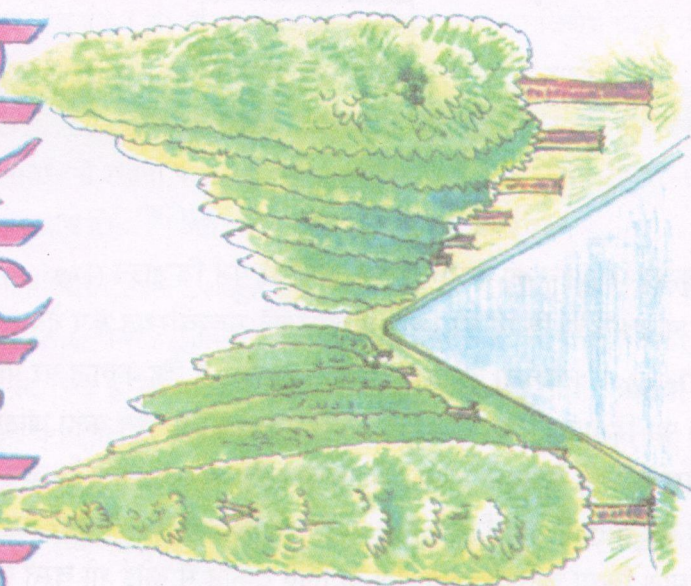


लवी मेला



माझी एकता

वन महोत्सव



अधिक पेड़ लगाइए



HIMAGHAL